धनंजय मल्लिक की तीन कविताएं

(1)

स्त्री जब कहीं नहीं बचेगी

स्त्री जब कहीं नहीं बचेगी
पूरी दुनिया में
पुरुषों के गिद्ध जैसी हो रही आंखों से
तब भी वह मौजूद रहेगी
बिल्कुल स्वस्थ और सुरक्षित
खासी जनजाति में।

(2)

नॉर्थ ईस्ट के प्रवेश द्वार से

भारत के भिन्न-भिन्न प्रदेशों से आकर
रेलगाड़ियां जब घुसती हैं नॉर्थ ईस्ट की ओर
मैं देखता हूं
प्रवेश द्वार पर खड़े होकर
उसमें दिल्ली होती है
कोलकाता होता है
मुंबई, चेन्नई और भोपाल होते हैं

जब वो लौटती हैं वापस
गाड़ियों में कहीं नहीं होता है
गुवाहाटी
शिलांग, दीमापुर और ईटानगर
जो जैसे आता है
उसी तरह लौटता है
बिना कुछ स्वीकार किए।

(3)

माजुली

हर साल मानसून में
ब्रह्मपुत्र[1]
निगल जाता है
दुनिया के सबसे बड़े नदी के द्वीप को
थोड़ा थोड़ा करके

नदी में
समाहित होती जाती हैं हर वर्ष
कोई न कोई सभ्यता और संस्कृति
जिसे दुनिया ने अब तक देखा भी नहीं है

एक और भाषा
एक और जाति
एक और समुदाय
अज्ञात ही रह जाती है
और किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता

माजुली को जिस तरह लुप्त किया जा रहा है
आने वाले समय में
माजुली का सिर्फ इतिहास होगा
भूगोल नहीं।

*(**लेखकीय परिचय:** धनंजय मल्लिक उत्तर बंग विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल के हिंदी विभाग के शोध-अध्येता हैं।)*

***

[1] **ब्रह्मपुत्र ही एक मात्र नदी है जिसके लिये पुलिंग का प्रयोग किया जाता है, इसे 'नद' कहा जाता है।**